RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

DATE
जून
30
2025

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors

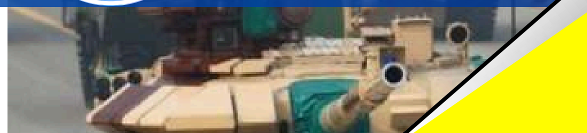

By Ankit Avasthi Sir

गंगा जल संधि (1996) / Ganga Water Treaty (1996)

संदर्भ:

भारत 2026 में समाप्त हो रही ***गंगा जल बंटवारा संधि*** के पुनर्मूल्यांकन और पुन:वार्ता की तैयारी कर रहा है। यह संधि भारत और बांग्लादेश के बीच 30 वर्षों से जल सहयोग का आधार रही है, और अब इसके भविष्य को लेकर नई रणनीति पर विचार किया जा रहा है।

गंगा जल संधि (1996): भारत-बांग्लादेश जल साझेदारी का ऐतिहासिक समझौता-

हस्ताक्षर:

- **12 दिसंबर 1996** को
- भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री **एच. डी. देवगौड़ा** और बांग्लादेश की प्रधानमंत्री **शेख हसीना** द्वारा हस्ताक्षरित

उद्देश्य:

- **गर्मियों/शुष्क मौसम (Dry Season)** में गंगा नदी के जल प्रवाह को **भारत और बांग्लादेश के बीच साझा करने** हेतु
- **फरक्का बैराज** पर जल वितरण को सुनिश्चित करना – जिससे **कोलकाता बंदरगाह की कार्यक्षमता बनी रहे**
- **सिंचाई, पारिस्थितिकी और नौवहन** के लिए दोनों देशों में **जल की उपलब्धता सुनिश्चित** करना

अवधि:

- इससे पहले के अल्पकालिक समझौतों को बदलकर यह समझौता **30 वर्षों की समयावधि (1996–2026)** के लिए लागू किया गया
- **नवीनता का प्रावधान:** परस्पर सहमति से इसे **आगे बढ़ाया जा सकता है**

महत्व: यह समझौता **द्विपक्षीय जल सहयोग का आधार** है और **ट्रांसबाउंडरी नदी प्रबंधन में स्थायित्व** सुनिश्चित करता है।

गंगा जल बंटवारा फॉर्मूला (भारत-बांग्लादेश संधि):

- **फरक्का पर जल उपलब्धता < 70,000 क्यूसेक:** भारत और बांग्लादेश को समान रूप से 35,000 क्यूसेक मिलेगा (50:50 बंटवारा)
- **जल उपलब्धता 70,000–75,000 क्यूसेक:**
  - बांग्लादेश को 35,000 क्यूसेक सुनिश्चित
  - शेष जल भारत को
- **जल उपलब्धता ≥ 75,000 क्यूसेक:**
  - भारत को 75,000 क्यूसेक
  - शेष बांग्लादेश को
- **महत्वपूर्ण महीना – अप्रैल:** अप्रैल के पहले और अंतिम दस दिनों में बांग्लादेश को 35,000 क्यूसेक जल की गारंटी
- **आपातकालीन समायोजन:** यदि किसी 10-दिनी अवधि में प्रवाह 50,000 क्यूसेक से कम हो जाए, तो दोनों देश आपात बैठक कर समायोजन तय करेंगे

निगरानी व्यवस्था:

- संयुक्त समिति (Joint Committee) प्रतिदिन दो स्थानों पर जल प्रवाह की निगरानी करती है:
  - फारक्का के फीडर नहर पर
  - बांग्लादेश के हार्डिंग ब्रिज पर
- समिति वार्षिक रिपोर्ट दोनों सरकारों को प्रस्तुत करती है

गंगा जल संधि (1996) पर भारत को पुनर्विचार-

1. संधि समाप्ति निकट:

- यह संधि **2026 में समाप्त** हो रही है।
- भारत चाहता है कि नई परिस्थितियों और ज़रूरतों के अनुरूप इसे संशोधित किया जाए।

2. बढ़ती जल आवश्यकता: भारत को अब **अतिरिक्त 30,000–35,000 क्यूसेक जल** की ज़रूरत है, क्योंकि:

- पश्चिम बंगाल व अन्य राज्यों में सिंचाई की मांग बढ़ी है।
- कोलकाता बंदरगाह में गाद जमाव (siltation) की समस्या बढ़ रही है।
- शहरीकरण और औद्योगिक विकास से जल की खपत तेज़ी से बढ़ी है।

3. लचीलापन नहीं: अधिकारी कहते हैं कि मौजूदा संधि में **जलवायु परिवर्तन और मौसमी जल संकट** से निपटने के लिए **कोई प्रावधान नहीं** है।

4. राज्यों का समर्थन: विशेष रूप से पश्चिम बंगाल ने कहा है कि उसे पर्याप्त जल नहीं मिल रहा, और वह संशोधन का समर्थन करता है।

5. प्रस्तावित बदलाव:

- भारत संभवत: **एक लघुकालीन और अधिक लचीली संधि** की मांग करेगा।
- यह रुख पाकिस्तान के साथ की जा रही सिंधु जल संधि की समीक्षा से मिलता-जुलता हो सकता है।

निष्कर्ष: जलवायु परिवर्तन, जनसंख्या वृद्धि और आर्थिक विकास की पृष्ठभूमि में, भारत को गंगा जल संधि को व्यावहारिक, लचीली और भारत-केंद्रित बनाने की ज़रूरत है।

भारत की पहली समुद्री NBFC / India's First Maritime NBFC

संदर्भ:

केंद्रीय पोर्ट्स, शिपिंग और जलमार्ग मंत्री श्री सर्बानंद सोनोवाल ने सागरमाला फाइनेंस कॉरपोरेशन लिमिटेड (SMFCL) का उद्घाटन किया। यह भारत की समुद्री क्षेत्र की पहली **गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी (NBFC)** है, जो बंदरगाहों और जलमार्ग परियोजनाओं के वित्तपोषण को नया आयाम देगी।

सागरमाला फाइनेंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड (SMFCL):

परिचय:

- पहले इसे **सागरमाला डेवलपमेंट कंपनी लिमिटेड** के नाम से जाना जाता था।
- यह एक **मिनी रत्न, श्रेणी-I,** केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम (CPSE) है।
- इसे **भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI)** द्वारा **गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी (NBFC)** के रूप में पंजीकृत किया गया है।
- यह भारत का पहला समुद्री क्षेत्र आधारित NBFC है।
- **मुख्यालय:** नई दिल्ली

उद्देश्य:

- समुद्री अवसंरचना और लॉजिस्टिक्स में वित्तीय अंतर को भरना।
- MSMEs, स्टार्टअप्स और शैक्षणिक संस्थानों के लिए वित्तीय समावेशन को सक्षम करना।
- जहाज निर्माण, क्रूज़ पर्यटन और हरित ऊर्जा जैसे रणनीतिक क्षेत्रों को समर्थन देना।
- अमृत काल विज़न 2047 के तहत भारत की वैश्विक समुद्री नेतृत्व की दिशा में सहयोग करना।

प्रमुख कार्य:

- बंदरगाह प्राधिकरणों, लॉजिस्टिक्स कंपनियों और समुद्री उद्यमियों को लघु, मध्यम और दीर्घकालिक ऋण प्रदान करना।
- ग्रीन हाइड्रोजन, जहाज निर्माण, डिजिटल पोर्ट्स जैसे नवाचारपरक समुद्री परियोजनाओं को वित्त देना।
- पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप (PPP) मॉडल आधारित बंदरगाह और संबद्ध अवसंरचना को वित्तीय सहायता देना।
- स्टार्टअप्स और अनुसंधान संस्थानों के साथ मिलकर समुद्री कौशल विकास और अनुसंधान परियोजनाओं में निवेश करना।

महत्त्व:

- SMFCL का गठन Maritime Amrit Kaal Vision 2047 के अनुरूप किया गया है।
- यह बंदरगाह, MSMEs, स्टार्टअप्स और समुद्री संस्थानों के लिए वित्तीय समाधान उपलब्ध कराकर विकास में सहायक होगा।
- जहाज निर्माण, नवीकरणीय ऊर्जा, क्रूज़ पर्यटन और समुद्री शिक्षा जैसे रणनीतिक क्षेत्रों को प्रोत्साहन मिलेगा।
- यह पहल भारत को वैश्विक समुद्री शक्ति बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है और समावेशी एवं सतत समुद्री विकास के लिए समर्पित वित्तीय प्रणाली की नींव रखती है।

भारत का समुद्री क्षेत्र-एक परिचय:

रणनीतिक महत्त्व:

- भारत का समुद्री क्षेत्र **राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय व्यापार** के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।
- देश के **कुल व्यापार का 95% मात्रा में और 70% मूल्य में** समुद्री मार्ग से होता है।

प्रशासनिक ढाँचा:

- यह क्षेत्र बंदरगाह, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय (MoPSW) के अंतर्गत आता है।
- भारत में कुल 12 प्रमुख बंदरगाह और 200+ छोटे बंदरगाह हैं।

प्रदर्शन (FY24):

- वित्तीय वर्ष 2023-24 में भारतीय बंदरगाहों ने 818 मिलियन टन कार्गो संभाला – जो FY23 से 4.45% की वृद्धि है।
- सरकार ने क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए 100% प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) और कर प्रोत्साहन की सुविधा दी है।

दीर्घकालिक दृष्टिकोण: अमृत काल विज़न 2047, Maritime India Vision 2030 पर आधारित है, जिसमें मुख्य लक्ष्य हैं:

- बंदरगाहों का वैश्वीकरण
- अंतर्देशीय और तटीय शिपिंग को बढ़ावा
- हरित और टिकाऊ विकास को प्राथमिकता

प्रमुख पहलें:

- **SAGAR SETU प्लेटफॉर्म (जून 2025):** MoPSW द्वारा लॉन्च किया गया, यह **समुद्री और लॉजिस्टिक संचालन में डिजिटल क्रांति** लाने के लिए तैयार है।
- **नई शिपिंग कंपनी की योजना:**
  - सरकार की योजना 1,000 नए जहाजों वाला भारतीय जहाज बेड़ा तैयार करने की है।
  - इसका उद्देश्य 2047 तक विदेशी मालभाड़ा लागत को एक-तिहाई तक घटाना है।

कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों से उत्पादन के मूल्य पर सांख्यिकीय रिपोर्ट / Statistical Report on Value of Output from Agriculture and Allied Sectors

संदर्भ:

राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO), सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI) ने कृषि और संबद्ध क्षेत्रों से प्राप्त उत्पादन मूल्य पर आधारित वार्षिक प्रकाशन **"Statistical Report on Value of Output from Agriculture and Allied Sectors (2011-12 to 2023-24)"** जारी किया है। इस रिपोर्ट में वर्ष 2011-12 से 2023-24 तक की अवधि में कृषि क्षेत्र की उत्पादन संबंधी प्रवृत्तियों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्रों के उत्पादन मूल्य पर सांख्यिकीय रिपोर्ट (2011–12 से 2023–24): प्रमुख निष्कर्ष

1. कृषि सकल मूल्य वर्धन (GVA) में वृद्धि:

- **वर्तमान कीमतों पर GVA में 225% की वृद्धि:** ₹1,502 हजार करोड़ (2011–12) से बढ़कर ₹4,878 हजार करोड़ (2023–24)।
- **स्थिर कीमतों पर GVO में 54.6% की वृद्धि:** ₹1,908 हजार करोड़ से ₹2,949 हजार करोड़।

2. फसल क्षेत्र का वर्चस्व:

- **2023–24 में फसल क्षेत्र का योगदान:** ₹1,595 हजार करोड़ (कुल GVO का 54.1%)।
- अनाज और फल-सब्ज़ियाँ मिलाकर फसल उत्पादन मूल्य का 52.5% हिस्सा।

3. अनाज उत्पादन और राज्यवार योगदान:

- **धान और गेहूं का मिलाकर ~85% अनाज GVO में योगदान।**
- **शीर्ष 5 राज्य (2023–24):** उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, पंजाब, तेलंगाना, हरियाणा।
  - इनका कुल योगदान: **53%**
  - **उत्तर प्रदेश पहले स्थान पर रहा**, लेकिन हिस्सेदारी में गिरावट (18.6% → 17.2%)।

4. फल और सब्ज़ियों की प्रवृत्तियाँ:

- केला (₹47,000 Cr) ने आम (₹46,100 Cr) को पीछे छोड़ा।
- आलू सबसे प्रमुख सब्ज़ी – GVO: ₹21,300 Cr → ₹37,200 Cr।
- फ्लोरिकल्चर का मूल्य दोगुना हुआ – ₹17,400 Cr → ₹28,100 Cr।

5. राज्यों में उत्पादन का बदलाव: फल, सब्ज़ी और पुष्प उत्पादन में प्रमुख राज्यों में बदलाव, जो क्षेत्रीय विविधीकरण को दर्शाता है।

6. मसाले और सुगंधित फसलें:

- **मध्य प्रदेश** शीर्ष पर – कुल GVO का **19.2%** हिस्सा।
- **कर्नाटक (16.6%)** और **गुजरात (15.5%)** अन्य अग्रणी राज्य।

7. पशुधन क्षेत्र में तेज़ उछाल:

- GVO: ₹4.88 लाख करोड़ (2011–12) → ₹9.19 लाख करोड़ (2023–24)।
- दूध प्रमुख बना रहा (हिस्सा घटा: 67.2% → 65.9%)।
- मांस का योगदान बढ़ा: 19.7% → 24.1%।

8. वानिकी क्षेत्र की प्रवृत्ति:

- GVO: ₹1.49 लाख करोड़ → ₹2.27 लाख करोड़।
- **औद्योगिक लकड़ी** का हिस्सा बढ़ा: 49.9% → 70.2% (व्यावसायिक रुझान)।

9. मत्स्य क्षेत्र का विकास:

- कुल कृषि GVO में हिस्सा: **4.2%** → **7.0%**।
- **समुद्री मत्स्य** का हिस्सा बढ़ा (49.8%), जबकि **आंतरिक मत्स्य** घटा (50.2%)।
- **पश्चिम बंगाल और आंध्र प्रदेश** में **महत्वपूर्ण बदलाव** देखे गए।

कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्रों का महत्व:

1. जीवीए और जीडीपी में योगदान: 2023–24 में कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्रों का योगदान: भारत के सकल मूल्य वर्धन (GVA) में लगभग 18%।

2. रोजगार सृजन:

- **भारत का सबसे बड़ा रोजगार प्रदाता क्षेत्र।**
- **45% से अधिक कार्यबल** कृषि और सम्बद्ध गतिविधियों से जुड़ा है (PLFS 2022–23)।

3. खाद्य सुरक्षा:

- 1.4 अरब से अधिक लोगों को खाद्य सुरक्षा प्रदान करता है – अनाज, दालें, फल-सब्जियाँ, डेयरी, मत्स्य और पशु उत्पादों के माध्यम से।
- PDS (सार्वजनिक वितरण प्रणाली) और खाद्य सब्सिडी योजनाओं की सफलता का आधार।

4. निर्यात में योगदान: भारत चावल, मसाले, समुद्री उत्पाद, कपास, चाय, कॉफी और भैंस के मांस का शीर्ष निर्यातक है।

5. ग्रामीण विकास और गरीबी उन्मूलन: ग्रामीण आय वृद्धि, आधारभूत ढांचे के निर्माण और उपभोग को बढ़ावा देने में सहायक।

6. रणनीतिक और राजनीतिक महत्त्व: महंगाई, ग्रामीण संकट और खाद्य मूल्य जैसे मुद्दों पर सीधा प्रभाव – राजनीतिक स्थिरता में अहम भूमिका।

- कृषि का उल्लेख **नीतिगत बहसों, बजट आवंटनों और चुनावी घोषणापत्रों** में नियमित रूप से होता है।

कांगो-रवांडा शांति समझौता / Congo–Rwanda Peace Agreement

संदर्भ:

रवांडा और कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य (DRC) ने अमेरिका की मध्यस्थता में एक शांति समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। इस समझौते का उद्देश्य वर्षों से जारी उस संघर्ष को समाप्त करना है, जिसमें हजारों लोगों की जान गई और लाखों लोग विस्थापन का शिकार हुए हैं।

कांगो-रवांडा शांति समझौते की मुख्य बातें-

1. शांति समझौता: समझौते के तहत रवांडा की सेनाओं को पूर्वी कांगो से 90 दिनों के भीतर हटाना होगा।

2. आर्थिक सहयोग:

- दोनों देशों के बीच क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण ढाँचे (Regional Economic Integration Framework) की स्थापना की जाएगी।
- यह ढाँचा व्यापार और निवेश को बढ़ावा देने पर केंद्रित रहेगा।
- कोबाल्ट, कॉपर और सोने जैसी खनिज आपूर्ति श्रृंखलाएं सहयोग का केंद्र होंगी।

3. सुरक्षा प्रावधान:

- दोनों देशों द्वारा **30 दिनों के भीतर एक संयुक्त सुरक्षा समन्वय तंत्र** स्थापित किया जाएगा।
- यह तंत्र विशेष रूप से FDLR (Democratic Forces for the Liberation of Rwanda) जैसे सशस्त्र समूहों पर ध्यान केंद्रित करेगा।

4. अंतरराष्ट्रीय समर्थन: दोहा में मध्यस्थता वार्ताएँ चल रही हैं जो कांगो में M23 विद्रोहियों के समाधान और समझौते के तहत तय आर्थिक ढाँचे को आगे बढ़ाने के लिए अहम हैं।

कांगो-रवांडा संघर्ष की पृष्ठभूमि:

1. 1994 रवांडा नरसंहार की उत्पत्ति:

- 800,000 से अधिक तुत्सी और उदारवादी हुतू नागरिकों की हत्या चरमपंथी हुतू बलों द्वारा की गई।
- नरसंहार के बाद FDLR जैसे हुतू मिलिशिया कांगो (तत्कालीन ज़ैरे) में भाग गए, जिससे क्षेत्रीय अस्थिरता की नींव पड़ी।

2. शरणार्थी संकट और उग्रवादी उपस्थिति:

- हथियारबंद हुतू शरणार्थी **पूर्वी कांगो** में बस गए, जो **रवांडा की सुरक्षा के लिए सीधा खतरा** बन गए।
- रवांडा ने **कांगो सरकार पर इन मिलिशिया को संरक्षण देने** का आरोप लगाया, जिससे दोनों देशों के बीच तनाव और गहरा गया।

3. पहला कांगो युद्ध (1996–1997):

- रवांडा ने 1996 में सैन्य हस्तक्षेप किया और लॉरेंट-देशीरे कबीला का समर्थन किया, जिन्होंने मोबुतु सेसे सेको को सत्ता से हटाया।
- यह हस्तक्षेप पहले कांगो युद्ध में बदल गया, जो 1997 में समाप्त हुआ लेकिन आगामी संघर्षों का आधार बना।

4. दूसरा कांगो युद्ध (1998–2003):

- मोबुतु के पतन के बाद शुरू हुआ **दूसरा कांगो युद्ध** – अफ्रीका के कई देशों की भागीदारी के कारण इसे "**अफ्रीका का विश्व युद्ध**" कहा जाता है।
- **रवांडा और युगांडा** ने पूर्वी कांगो में विद्रोही गुटों को समर्थन दिया, जबकि कांगो सरकार को **अंगोला, जिम्बाब्वे** आदि का समर्थन मिला।
- इस युद्ध में **लाखों लोगों की मृत्यु** हुई और क्षेत्र में मानवीय संकट गहरा गया।

5. M23 विद्रोह (2012):

- **M23 विद्रोही समूह** की स्थापना पूर्वी कांगो में हुई, जिसमें अधिकतर सदस्य **CNDP (रवांडा समर्थित पूर्व सैन्य गुट)** से थे।
- M23 ने गोमा जैसे रणनीतिक शहरों और खनिज-समृद्ध क्षेत्रों पर कब्ज़ा कर लिया, जिससे भीषण हिंसा और विस्थापन हुआ।

आगामी चुनौतियाँ:

- **समझौते का पालन अनिवार्य:** दोनों देशों को समझौते की सभी शर्तों का ईमानदारी से पालन करना होगा, तभी शांति बहाल हो सकेगी।
- **दोहा वार्ताएँ महत्वपूर्ण:** कांगो सरकार और M23 विद्रोहियों के बीच चल रही दोहा की मध्यस्थता वार्ताएँ इस समझौते की सफलता के लिए केंद्रबिंदु हैं।
- **पूर्व अनुभवों से सतर्कता:** विश्लेषकों ने जताई सावधानीपूर्ण आशावादिता, क्योंकि पूर्व के शांति प्रयासों को गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ा था।
- **स्थायी समाधान की आवश्यकता:** केवल सैन्य वापसी या आर्थिक ढांचे की स्थापना नहीं,स्थायी राजनीतिक समाधान, समुदायों का पुनर्वास, और पारदर्शिता भी ज़रूरी है।

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के लिए क्यूआर कोड / QR codes for PM Gram Sadak Yojana

संदर्भ:

ग्रामीण विकास मंत्रालय (MoRD) ने सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को निर्देश दिया है कि प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (PMGSY) के तहत निर्मित सड़कों पर लगाए गए रखरखाव डिस्प्ले बोर्डों पर QR कोड अनिवार्य रूप से स्थापित किए जाएं। इसका उद्देश्य पारदर्शिता बढ़ाना और सड़क की स्थिति की निगरानी को आसान बनाना है।

QR कोड पहल (QR Code Initiative): ग्रामीण सड़कों के रखरखाव में जनभागीदारी-

उद्देश्य: प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (PMGSY) के अंतर्गत बनी सड़कों की गुणवत्ता और रखरखाव पर जनता से सीधा फीडबैक प्राप्त करना।

मुख्य विशेषताएँ:

- **सभी राज्य और केंद्रशासित प्रदेश** अब **PMGSY सड़कों पर QR कोड युक्त डिस्प्ले बोर्ड** लगाएँगे।
- प्रत्येक सड़क के बोर्ड पर **QR कोड** होगा जिसे **स्मार्टफोन से स्कैन** कर कोई भी व्यक्ति:
  - सड़क का विवरण देख सकता है।
  - **खराब रखरखाव या क्षति की तस्वीरें और प्रतिक्रिया** भेज सकता है।

तकनीकी एकीकरण: यह सुविधा **e-MARG प्रणाली** (सड़क रखरखाव की निगरानी हेतु मौजूदा प्रणाली) से **एकीकृत** है।

डेटा विश्लेषण:

- नागरिकों द्वारा भेजी गई तस्वीरों की **इंजीनियरों द्वारा समीक्षा** की जाएगी।
- इनका **AI/ML टूल्स** की मदद से विश्लेषण कर सड़कों को **Performance Evaluation (PE) अंक** दिए जाएँगे।

पायलट और कार्यान्वयन:

- विभिन्न राज्यों में **पायलट परीक्षण** किए गए, जैसे **हिमाचल प्रदेश** में।
- सफलता के बाद यह सुविधा **पूरे देश में लागू** की गई।

महत्त्व: पहले भी खराब कार्य की शिकायतें सामने आती थीं, परंतु यह पहल अब नागरिकों को सशक्त बनाती है कि वे सीधे रखरखाव की गुणवत्ता पर निगरानी रख सकें।

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (PMGSY): ग्रामीण भारत को जोड़ने की राष्ट्रीय पहल

शुरुआत:

- **25 दिसंबर, 2000** को **PMGSY Phase-I** की शुरुआत की गई।
- उद्देश्य: **ग्रामीण क्षेत्रों में आधारभूत सड़क अवसंरचना का विकास**, जिससे सामाजिक-आर्थिक समावेशन सुनिश्चित हो सके।

विभिन्न चरण:

- **दूसरा चरण (2013):** मौजूदा ग्रामीण सड़कों को मजबूत करने और उन्नयन पर ध्यान।
- **RCPLWEA (2016):**
  - **लेफ्ट विंग उग्रवाद (LWE) प्रभावित क्षेत्रों** में सड़क कनेक्टिविटी हेतु विशेष परियोजना।
- **तीसरा चरण (2019):** मुख्य ग्रामीण सड़कों और कृषि बाजारों को जोड़ने हेतु योजनाएं।
- **चौथा चरण (2024):** 25,000 नए बस्तियों को ऑल-वेदर सड़क कनेक्टिविटी प्रदान करने का लक्ष्य।
  - **पात्रता:**
    - **मैदानी क्षेत्र:** जनसंख्या 500+
    - **पूर्वोत्तर, पहाड़ी, विशेष श्रेणी क्षेत्र:** जनसंख्या 250+
    - **LWE क्षेत्रों:** जनसंख्या 100+

वित्तीय संरचना:

- प्रारंभ में **पूर्णत: केंद्र प्रायोजित योजना**।
- अब **60:40 (केंद्र:राज्य)** के अनुपात में (पूर्वोत्तर और हिमालयी राज्यों के लिए अलग व्यवस्था)।

क्रियान्वयन एजेंसी: राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी (NRIDA), ग्रामीण विकास मंत्रालय (MoRD) के अधीन।

उपलब्धियाँ:

- **अब तक स्वीकृत सड़क लंबाई:** 8,36,850 किमी
- **पूरी हो चुकी सड़क लंबाई:** 7,81,209 किमी

रखरखाव व्यवस्था:

- निर्माण के बाद सभी सड़कों का **5 वर्षों तक ठेकेदार द्वारा रखरखाव**।
- इसके लिए उपयोग में लाया जाता है **e-MARG प्रणाली** – एक **मोबाइल एवं वेब-आधारित ई-गवर्नेंस समाधान**।

महत्त्व:

- ग्रामीण सड़कों का विषय **राज्य सरकारों के अधीन** आता है, पर PMGSY के माध्यम से केंद्र **समान ग्रामीण विकास** को सुनिश्चित करता है।
- यह योजना **सामाजिक, आर्थिक और भौगोलिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों को मुख्यधारा से जोड़ने में सहायक** रही है।

ग्लोबल एलायंस फॉर वैक्सीन्स एंड इम्यूनाइजेशन / GAVI

संदर्भ:

अमेरिका के स्वास्थ्य सचिव रॉबर्ट एफ. केनेडी जूनियर ने घोषणा की है कि अब यू.एस. **ग्लोबल अलायंस फॉर वैक्सीन एंड इम्यूनाइजेशन (Gavi)** को वित्तीय सहायता नहीं देगा। उन्होंने इसके पीछे की वजह यह बताई कि Gavi "वैज्ञानिक तथ्यों को अनदेखा कर चुका है" और उसने जनता का भरोसा खो दिया है।

GAVI: ग्लोबल एलायंस फॉर वैक्सीन्स एंड इम्यूनाइजेशन

परिचय:

- **Gavi** एक **वैश्विक टीका गठबंधन** है, जो **सार्वजनिक-निजी भागीदारी** के माध्यम से कार्य करता है।
- **स्थापना:** 2000
- **मुख्यालय:** जिनेवा, स्विट्ज़रलैंड

प्रमुख साझेदार:

- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)
- यूनिसेफ (UNICEF)
- बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन
- विश्व बैंक

उद्देश्य:

- **कम-आय वाले देशों के बच्चों को टीकों की उपलब्धता सुनिश्चित करना।**
- **वैश्विक टीकाकरण दरों को बढ़ावा देना** और **रोगों की रोकथाम में सहयोग** करना।

भारत और Gavi:

- भारत का Gavi के साथ **गत एक दशक में संबंधों में बड़ा परिवर्तन** आया है।
- 2017 में Gavi की सहायता से बाहर निकलने के बाद, भारत अब सहायता प्राप्त करने वाला नहीं, बल्कि एक प्रमुख वैक्सीन आपूर्तिकर्ता और योगदानकर्ता बन चुका है।
- भारत ने पिछले फंडिंग चक्र में $10 मिलियन की प्रतिबद्धता जताई थी, जो वैश्विक टीकाकरण प्रयासों में इसके योगदान को दर्शाता है।

SPREE योजना / SPREE Scheme

संदर्भ:

कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ESIC) ने अपनी 196वीं बैठक में वर्ष 2025 के लिए इस योजना को पुन: शुरू किया है, जिसका उद्देश्य देशभर में ESI कवरेज का विस्तार करना है। यह कदम संगठित क्षेत्र के श्रमिकों को बेहतर सामाजिक सुरक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करने की दिशा में एक अहम पहल है।

SPREE योजना (Scheme to Promote Registration of Employers/Employees) और एमनेस्टी योजना – 2025

SPREE योजना:

- **शुरुआत:** वर्ष **2016** में की गई थी।
- **उद्देश्य:** अंजीकृत नियोक्ताओं और छूटे हुए कर्मचारियों (ठेके पर या अस्थायी रूप से कार्यरत) को ESI अधिनियम के दायरे में लाना।
- **अब तक की उपलब्धि: 88**,000+ नियोक्ताओं और 1.02 करोड़ कर्मचारियों का पंजीकरण हो चुका है।
- **नई अवधि: 1 जुलाई 2025 से 31 दिसंबर 2025** तक **फिर से लागू** की जा रही है।
- **मुख्य लाभ:**
    - स्वैच्छिक अनुपालन को बढ़ावा, न कि दंडात्मक दृष्टिकोण।
    - विवादों और मुकदमों का बोझ घटेगा।
    - पंजीकरण प्रक्रिया सरल होगी, जिससे स्टेकहोल्डर्स के साथ विश्वास और सहयोग बढ़ेगा।

एमनेस्टी योजना – 2025:

- **स्वीकृति:** कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ESIC) द्वारा अनुमोदित।
- **समयावधि: 1 अक्टूबर 2025 से 30 सितंबर 2026** तक लागू।
- **उद्देश्य:**
    - ESI अधिनियम के तहत **एकमुश्त विवाद समाधान का अवसर प्रदान करना**।
    - **विवादों को कम करना** और **अनुपालन को प्रोत्साहित करना**।

इन योजनाओं का उद्देश्य **औपचारिक श्रमबल को बढ़ावा देना**, **विवादों को सुलझाना**, और **सामाजिक सुरक्षा के दायरे** को विस्तारित करना है।

ढोल / Dhole

संदर्भ:

पूर्वोत्तर भारत में स्थानीय रूप से विलुप्त माने जाने वाला ढोल या एशियाई जंगली कुत्ता (Cuon alpinus) अब असम के काजीरंगा-कार्बी आंगलोंग परिदृश्य (KKAL) में दोबारा दिखाई दिया है। यह हालिया पुष्टि भारतीय वन्यजीव संस्थान (WII) द्वारा की गई है।

- पूर्वोत्तर भारत में ढोल की आखिरी पुष्टि हुई उपस्थिति वर्ष 2011 में नागालैंड से दर्ज की गई थी। यह पुनःअवस्थिति क्षेत्र की जैव विविधता के संरक्षण के लिए एक सकारात्मक संकेत मानी जा रही है।

ढोल (Dhole): एक संकटग्रस्त सामाजिक शिकारी:

सामाजिक व्यवहार:

- अत्यधिक सामाजिक प्राणी – सामान्यतः **30 सदस्यों तक के झुंड** में रहते हैं।
- **शिकार करते समय अकेले या जोड़े में भी** देखे जा सकते हैं, यह **शिकार की उपलब्धता** पर निर्भर करता है।

आयु सीमा:

- **जंगली में:** 10–13 वर्ष
- **कैद में:** अधिकतम 16 वर्ष तक

मुख्य खतरे:

- **आवासीय क्षेत्र का क्षय (Habitat loss)**
- **शिकार की घटती उपलब्धता (Prey depletion)**
- **मानवों द्वारा प्रताड़ना**
- **संक्रामक रोग**
- **अन्य शिकारी प्रजातियों से प्रतिस्पर्धा**
- इन कारणों से इनकी **जनसंख्या खंडित** हो रही है।

वितरण क्षेत्र:

- वर्तमान में केवल **मध्य और पूर्वी एशिया के कुछ हिस्सों** तक सीमित: **भारत, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, चीन, म्यांमार, इंडोनेशिया, थाईलैंड, मलेशिया**

अल्फा जीनोम / AlphaGenome

संदर्भ:

Google DeepMind ने AlphaGenome नामक एक नया AI टूल जारी किया है, जो मानव DNA में एकल नाभिक परिवर्तन (single variants) के जीन नियमन पर कैसे प्रभाव डालते हैं, इसका उच्च-रिज़ॉल्यूशन पूर्वानुमान करता है।

AI-जीनोमिक मॉडल: डीएनए म्यूटेशन की सटीक भविष्यवाणी की दिशा में क्रांतिकारी पहल:

परिचय:

- यह **नया AI मॉडल** विशेष रूप से इस उद्देश्य से डिज़ाइन किया गया है कि वह **मानव डीएनए में होने वाले म्यूटेशन (परिवर्तनों) के कार्यात्मक प्रभाव** की **सटीक भविष्यवाणी** कर सके।

मुख्य विशेषताएँ:

- **लंबे डीएनए अनुक्रम (up to 1 million base pairs)** को विश्लेषित करने की क्षमता।
- **सामान्य और दुर्लभ दोनों प्रकार के जेनेटिक वेरिएंट्स** का मूल्यांकन कर सकता है।
- **भिन्न-भिन्न कोशिका प्रकारों और जैविक प्रक्रियाओं** पर प्रभाव का विश्लेषण करता है – **सिर्फ एक एकीकृत मॉडल** के माध्यम से।
- **सार्वजनिक जीनोमिक डाटासेट्स** से ट्रेन किया गया है।
- **उपलब्धता:**
  - **API के माध्यम से** उपलब्ध है।
  - केवल **शोध-उन्मुख और गैर-व्यावसायिक उपयोग** के लिए।
  - **क्लिनिकल डायग्नोसिस** के लिए **अभी स्वीकृत नहीं** है।

महत्त्व:

- **AI आधारित जीनोमिक अनुसंधान** में **बड़ा कदम**।
- **नॉन-कोडिंग डीएनए** (जो प्रोटीन नहीं बनाता) की भूमिका को समझने में सहायक – ये क्षेत्र **कैंसर जैसी कई अनुवांशिक बीमारियों से जुड़े होते हैं**।
- यह मॉडल **बायोसाइंसेज़ और प्रिसिजन हेल्थ** में **AI की बढ़ती भूमिका** को दर्शाता है।

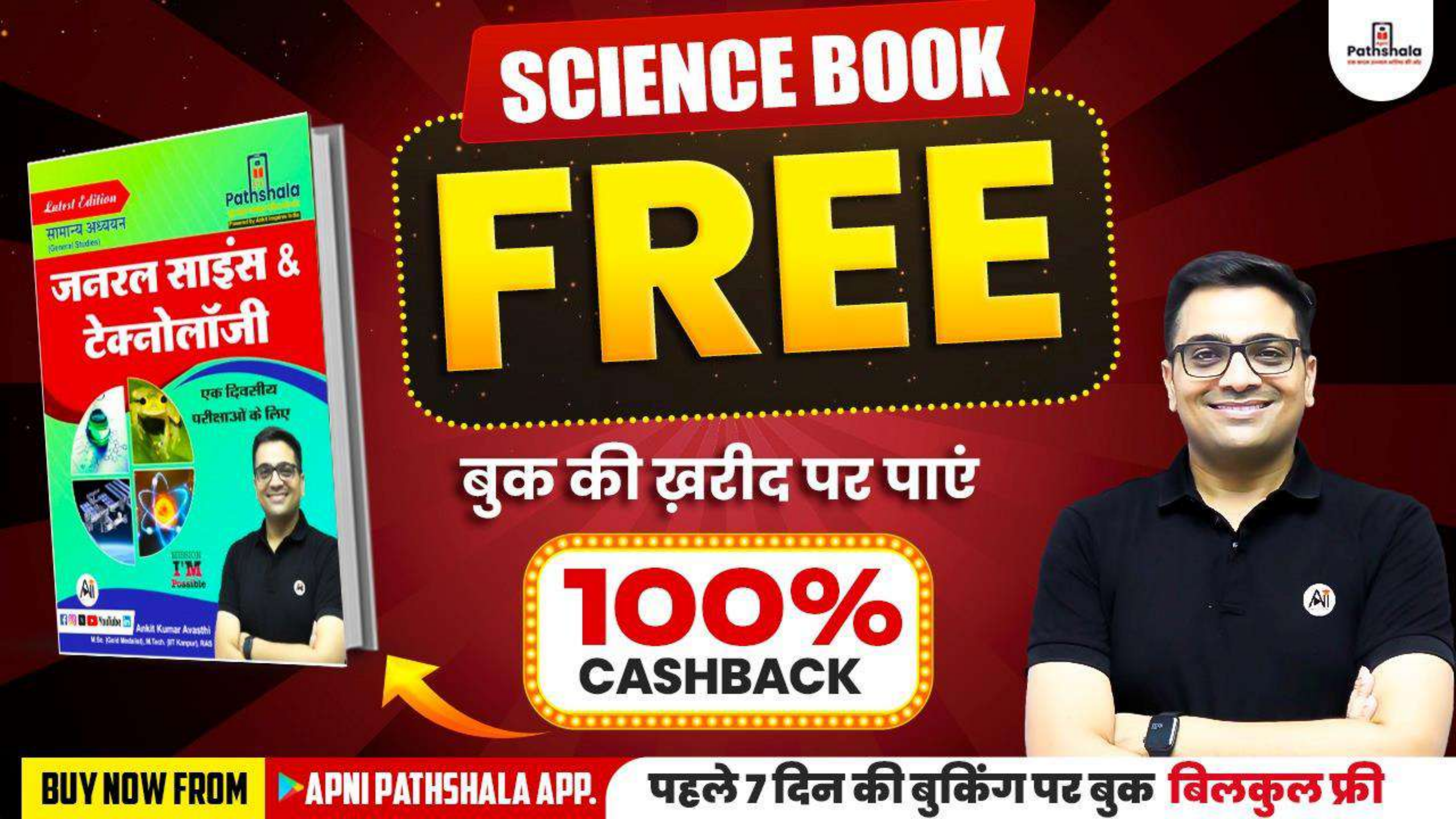
Pathshala
SCIENCE BOOK
FREE
Latest Edition
सामान्य अध्ययन
(General Studies)
जनरल साइंस &
टेक्नोलॉजी
एक दिवसीय
परीक्षाओं के लिए
Pathshala
Ankit Kumar Avasthi
बुक की ख़रीद पर पाएं
100%
CASHBACK
BUY NOW FROM
APNI PATHSHALA APP.
पहले 7 दिन की बुकिंग पर बुक बिलकुल फ्री

FUNDAMENTALS OF
STOCK MARKET
LEARN HOW TO TRADE
COUPON CODE
ANKIT500
Course fee
₹1999/-
Course fee
₹1499/-
Special
OFFER ON
Father's
DAY
INVESTMENT की करो जीरो से शुरुआत
BBK
Baaten Bazar ki

FOUNDATION COURSE OF
MUTUAL FUND
COUPON CODE
ANKIT500
Invest in Knowledge
Grow Your Wealth
Course fee
₹1999/-
Course fee
₹1499/-
Special
OFFER ON
Father's
DAY
एक निवेश समझदारी से..
Course Validity
1 YEAR

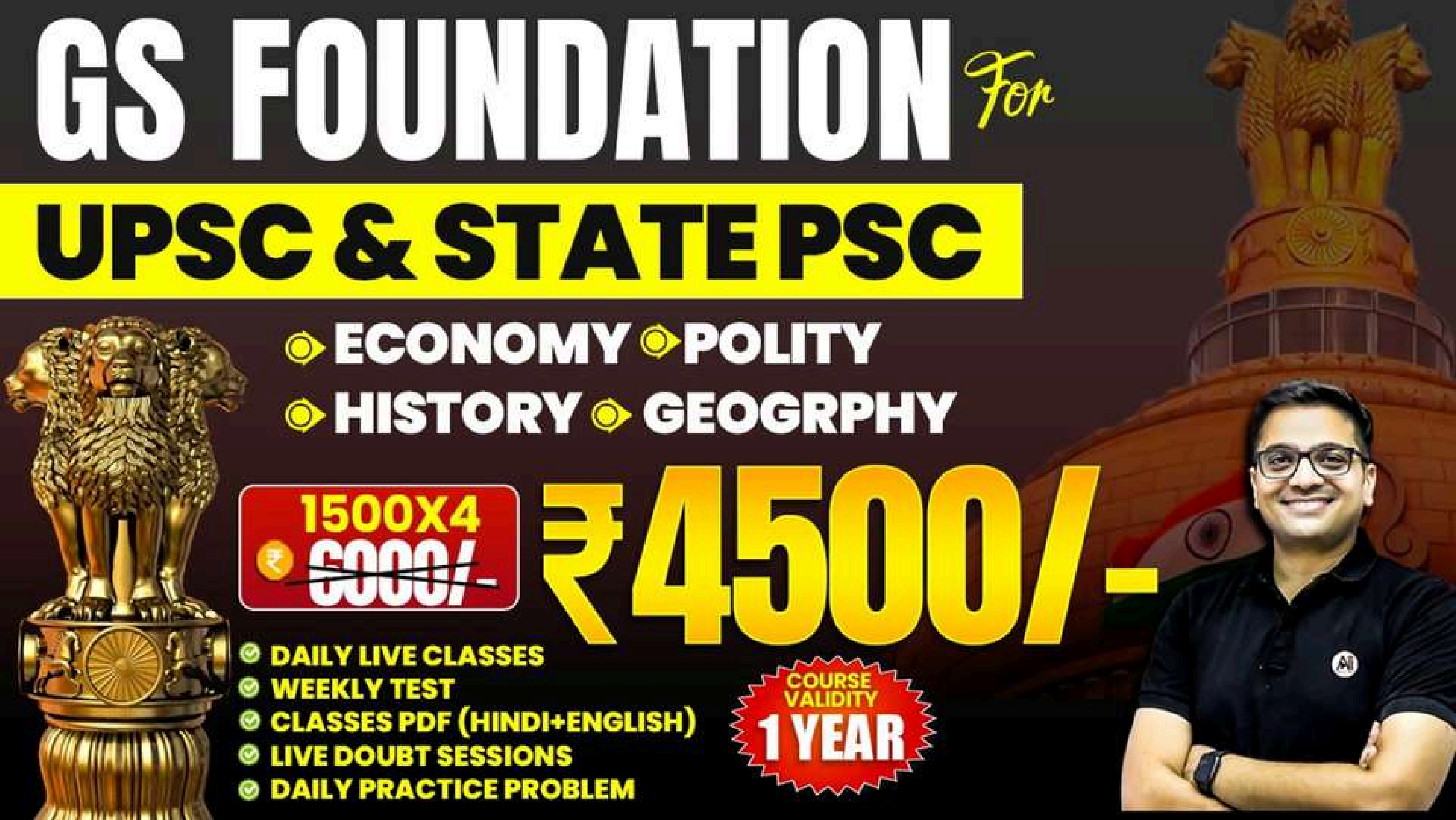
GS FOUNDATION For
UPSC & STATE PSC
ECONOMY
POLITY
HISTORY
GEOGRPHY
1500X4
6000/-
₹4500/-
DAILY LIVE CLASSES
WEEKLY TEST
CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
LIVE DOUBT SESSIONS
DAILY PRACTICE PROBLEM
COURSE VALIDITY
1 YEAR

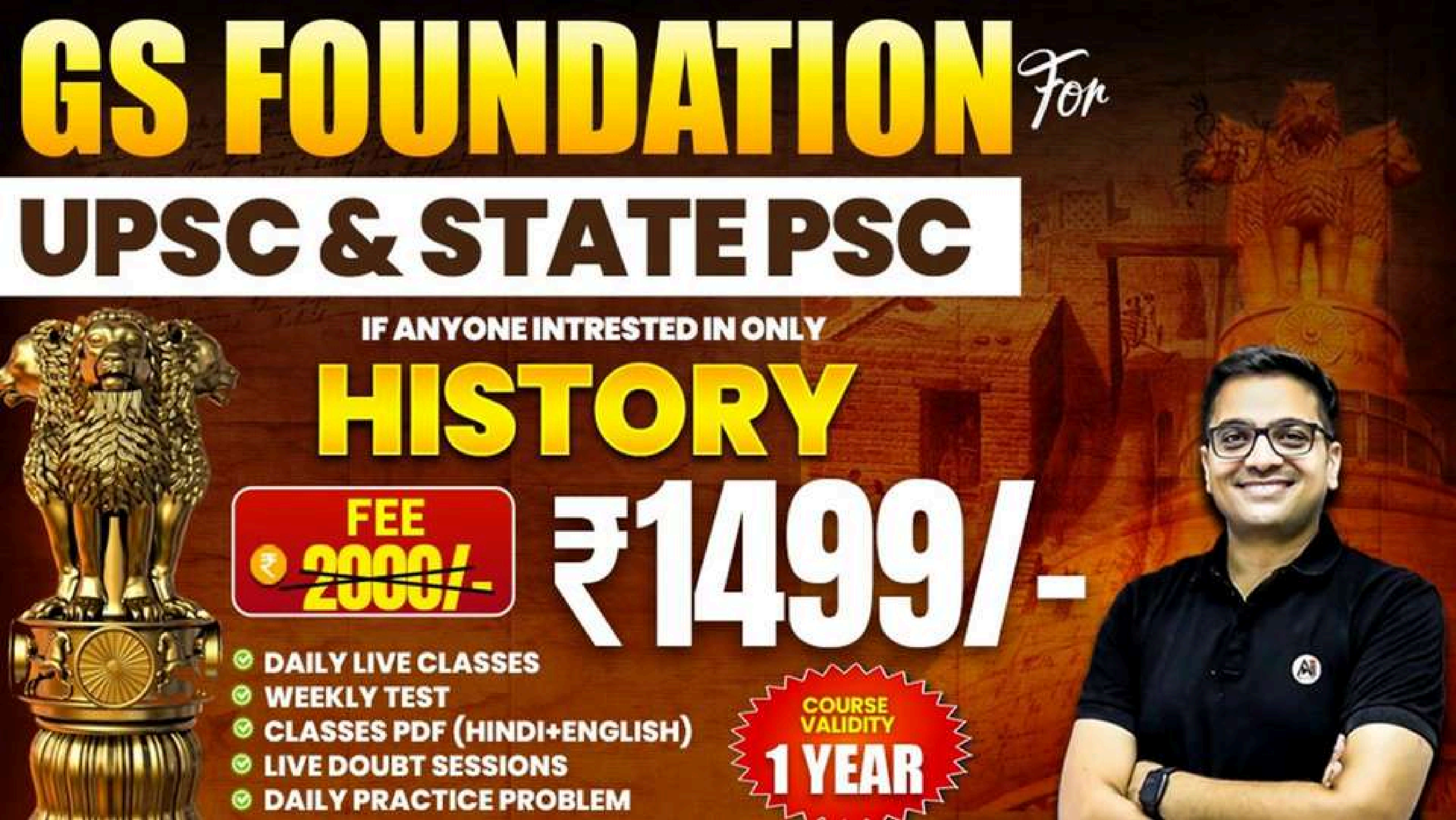
GS FOUNDATION For
UPSC & STATE PSC
IF ANYONE INTRESTED IN ONLY
HISTORY
FEE
₹ 2000/-
₹1499/-
DAILY LIVE CLASSES
WEEKLY TEST
CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
LIVE DOUBT SESSIONS
DAILY PRACTICE PROBLEM
COURSE VALIDITY
1 YEAR

GS FOUNDATION For
UPSC & STATE PSC
IF ANYONE INTRESTED IN ONLY
ECONOMY
FEE
₹ 2000/-
₹1499/-
DAILY LIVE CLASSES
WEEKLY TEST
CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
LIVE DOUBT SESSIONS
DAILY PRACTICE PROBLEM
COURSE VALIDITY
1 YEAR

जानिए
भारतीय संविधान
CONSTITUTION OF INDIA
मात्र
1499/-Year
Enroll Now !
1 year validity

GS FOUNDATION
Hand Written Notes
Pathshala
भारतीय भूगोल
भौतिक तथा विश्व भूगोल
भारत तथा विश्व की अर्थव्यवस्था
भारतीय संविधान
BEST OFFER
1999Rs
4 पुस्तकों का सम्पूर्ण सेट
अधिक जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करें....
7878158882
Bilingual
By Ankit Avasthi Sir

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण
RNA : Real News Analysis
MONTHLY CURRENT AFFAIRS
UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण
MONTH
जनवरी, 2025
By Ankit Avasthi Sir
MONTHLY MAGAZINE
FREE!
अधिक जानकारी के लिए दिए गए
नंबर पर संपर्क करें....
7878158882
Billingual
ANKIT AVASTHI SIR

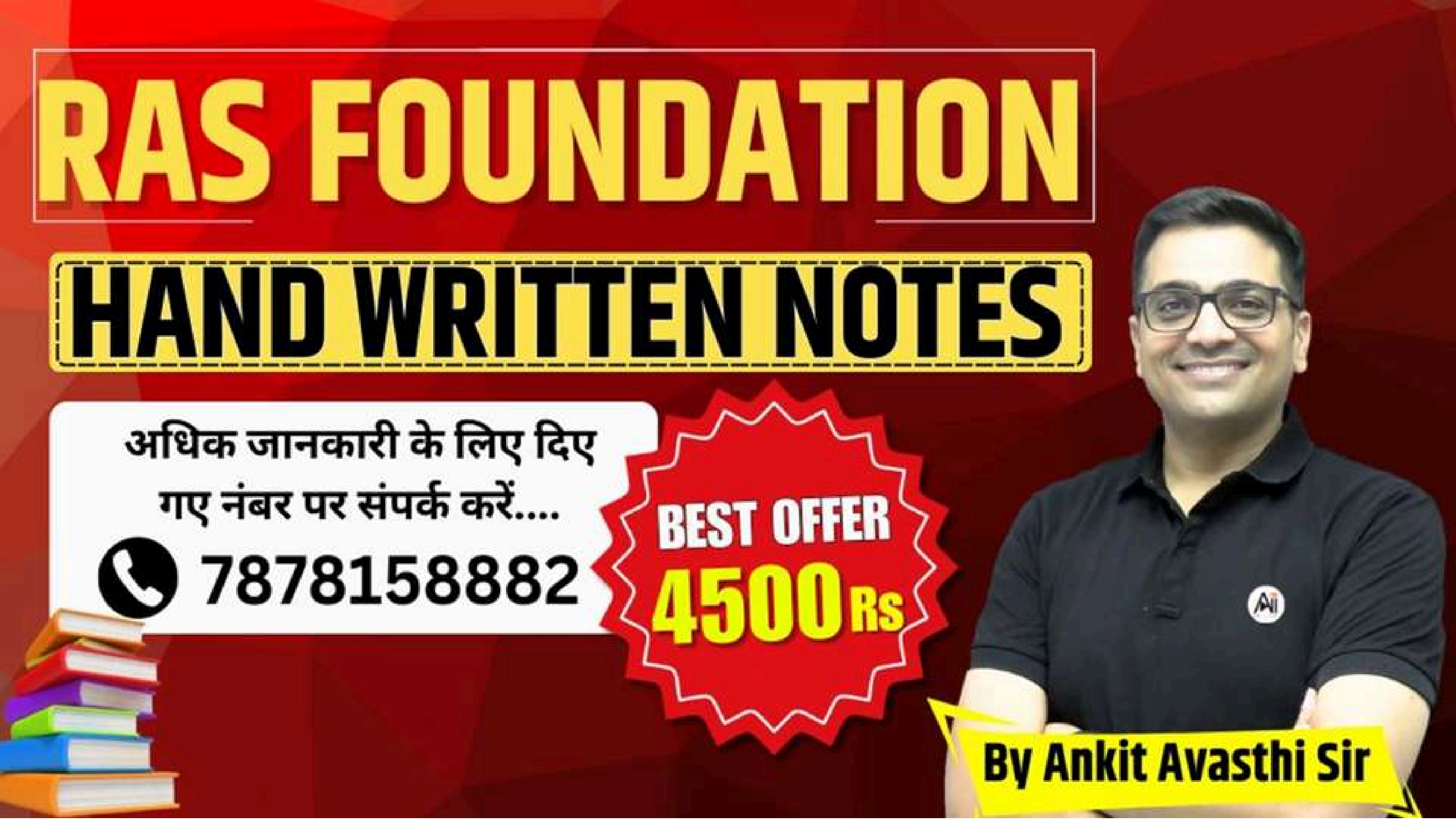
RAS FOUNDATION
HAND WRITTEN NOTES
अधिक जानकारी के लिए दिए
गए नंबर पर संपर्क करें....
7878158882
BEST OFFER
4500 Rs
By Ankit Avasthi Sir

CALL CENTRE

HOW MAY I HELP YOU

7878158882

AnkitInspiresIndia

Download "Apni Pathshsla" app now!

Follow us: